सामाजिक समूह के तत्व अथवा विशेषताएँ (Elements or Characteristics of Social Group)

कुछ सामान्य तत्वों की सहायता से ही सामाजिक समूह की वास्तविक प्रकृति को समझा जा सकता है।

(1) समूह व्यक्तियों का संग्रह है — प्रत्येक सामाजिक समूह का निर्माण कुछ एवं व्यक्तियों के द्वारा होता है जो परस्पर सम्बन्धित हों। ऑगबर्न ने यद्यपि पारस्परिक समीपता को भी सामाजिक समूह की विशेषता माना है लेकिन यह कथन उचित प्रतीत नहीं होता। इसका कारण यह है कि समूह का निर्माण करने वाले व्यक्तियों के बीच प्रत्यक्ष सम्बन्ध होना आवश्यक नहीं है, बल्कि एक-दूसरे से बहुत दूर रहने वाले व्यक्ति भी यदि किसी स्थिति के प्रति जागरूक होने के कारण स्वयं को एक-दूसरे से सम्बन्धित महसूस कर रहे हों तो भी वे समूह का निर्माण करते हैं। इस प्रकार समूह व्यक्तियों का एक मूर्त संगठन है।

(2) एक निश्चित ढाँचा —

फिचर (Fichter) ने यह स्पष्ट किया है कि अन्य संगठनों के समान सामाजिक समूह की भी एक निश्चित संरचना होती है। इस संरचना में समूह के सभी सदस्यों की स्थिति निर्धारित होती है। यद्यपि यह विभाजन बहुत अधिक स्पष्ट नहीं होता लेकिन फिर भी किसी न किसी रूप में सदस्यों के बीच एक स्तरीकरण अवश्य पाया जाता है। उदाहरण के लिए, यूनिवर्सिटी और कॉलेज के सभी शिक्षक एक-दूसरे समूह के सदस्य हैं, लेकिन तो भी उनके पद के अनुसार

Created By Sign Doc

उनमें एक स्तरीकरण जरूर पाया जाता है।

(3) कार्यात्मक विभाजन –

एक समूह के सभी सदस्य पारस्परिक सम्बन्धों द्वारा बँधे होते हैं लेकिन सभी सदस्य बिलकुल समान कार्य नहीं करते। वे पृथक्-पृथक् कार्यों द्वारा समूह को संगठित बनाये रखते हैं। ऊपर के उदाहरण के अनुसार सभी शिक्षक एक ही विषय नहीं पढ़ाते बल्कि भिन्न-भिन्न और एक ही विषय की विभिन्न शाखाओं का ज्ञान देकर समूह के उद्देश्यों को पूरा करने का प्रयत्न करते हैं।

(4) समान स्वार्थ –

एक समूह के सभी सदस्य समान स्वार्थों के द्वारा बँधे होते हैं। वास्तविकता यह है कि कोई व्यक्ति किसी विशेष समूह का सदस्य तभी बनता है, जब उस समूह द्वारा उसके हितों की पूर्ति होने की सम्भावना होती है।

Created By Sign Doc